सबलोग

वर्ष 6, अंक 4, अप्रैल 2014

ISSN 2277-5897 SABLOG

सम्पादक

किशन कालजयी

सहायक सम्पादक

राजन अग्रवाल

सम्पादकीय सलाहकार

आनन्द कुमार

सुबोध नारायण मालाकार

राम मेश्राम

मणीन्द्र नाथ ठाकुर

आनन्द प्रधान

सन्तोष कुमार शुक्ल

विशेष सम्पादकीय सहयोग

मंजु रानी सिंह

अखलाक 'आहन'

आशा

मीरा मिश्रा

महाप्रबन्धक

श्याम सुन्दर

प्रबन्धक

तृप्ति पाण्डेय

सम्पादकीय सम्पर्क

एफ-3/78-79, सेक्टर-16

रोहिणी, दिल्ली-110089

फोन : 011-27891526

sablogmonthly@gmail.com

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त

सदस्यता शुल्क

एक अंक 25 रुपये – वार्षिक : 300 रुपये

द्विवार्षिक : 500 रुपये – आजीवन : 5000 रुपये

चेक या बैंक ड्राफ्ट सम्पादकीय पते पर 'संवेद फाउण्डेशन' के नाम भेजें स्वामी, सम्पादक, प्रकाशक व मुद्रक किशन कालजयी द्वारा बी-3/44, सेक्टर-16, रोहिणी, दिल्ली-110089 से प्रकाशित और लक्ष्मी प्रिन्टर्स, 556 जीटी रोड शाहदरा दिल्ली-110032 से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं, उनसे सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी विवाद के लिए न्यायक्षेत्र दिल्ली।

संवेद फाउण्डेशन का मासिक प्रकाशन

इस बार

लोकमत / **बसन्त कुमार**

मुनादी / **कहाँ है तीसरा मोर्चा?** 4

तीसरा मोर्चा का भविष्य

तीसरा मोर्चा या तीसरा विकल्प : **जीवन सिंह** 6

विपरीतों का अवसरवादी समुच्चय : **देवेन्द्र सिंह** 8

नीतिहीनता के दौर में सियासी दाव : **विजय कुमार** 10

तीसरा मोर्चा और हिन्दी पट्टी की राजनीति : **रवि रंजन** 13

तीसरे मोर्चे की चुनौतियाँ : **सुधा सिंह** 15

प्रासंगिक या राजनैतिक अवसरवादिता : **आशुतोष कुमार झा** 17

विचारहीनता का शिकार : **राम नरेश राम** 19

तीसरे मोर्चे का ताना-बाना : **सरिता** 21

महत्त्वाकांक्षाओं का दलदल : **अरुण कुमार सिंह** 23

तीसरा मोर्चा और माकपा : **प्रमोद कुमार** 25

अप्रासंगिकता का पर्याय 'तीसरा मोर्चा' : **धर्मेन्द्र प्रताप सिंह** 28

राज्य

उत्तर-प्रदेश / आधे अधर में : **अरविन्द विद्रोही** 30

बिहार / हकीकत या फसाना : **अनिल कुमार** 32

पश्चिम-बंगाल / अग्निकन्या की राह में रोड़े : **अश्विनी कुमार** 34

पूर्वोत्तर / चुनावी-राजनीति का आलम : **सुवालाल जांगू** 36

स्तम्भ

साहित्य / प्रेमचन्द का राष्ट्र : तब और अब : **ऋषिकेश राय** 39

मीडिया / विश्वसनीयता का सवाल : **अकबर रिजवी** 42

मुद्दा / आरक्षण का सामाजिक सन्दर्भ : **जयवीर सिंह** 45

सामयिक / चुनावी सर्वे की सियासत : **स्वतंत्र मिश्र** 48

युवा उद्घोष / सोशल मीडिया का सरोकार : **अमरेश आकाश** 50

इतिहास / 'स्वदेश' का स्व-देश चिन्तन : **अर्चना उपाध्याय** 52

रंगमंच / शोषक-शक्तियों की पहचान का नाटक : **सर्वेश कुमार मौर्य** 54

बनारस-राग / शहर के अन्दर शहर : **अजय मिश्र** 57

स्त्री-विमर्श / एक स्त्री का लेखक होना : **रमणिका गुप्ता** 60

सिनेमा / बॉलीवुड में स्त्री : **अतुल सिंह** 64

पुस्तक-समीक्षा / अपने समय का राजनीतिक दस्तावेज : **प्रदीप कुमार सिंह** 66

आवरण एवं साज-सज्जा : क्वालिटी प्रिन्टर्स, दिल्ली

'स्वदेश' का स्व-देश चिन्तन

इतिहास

अर्चना उपाध्याय

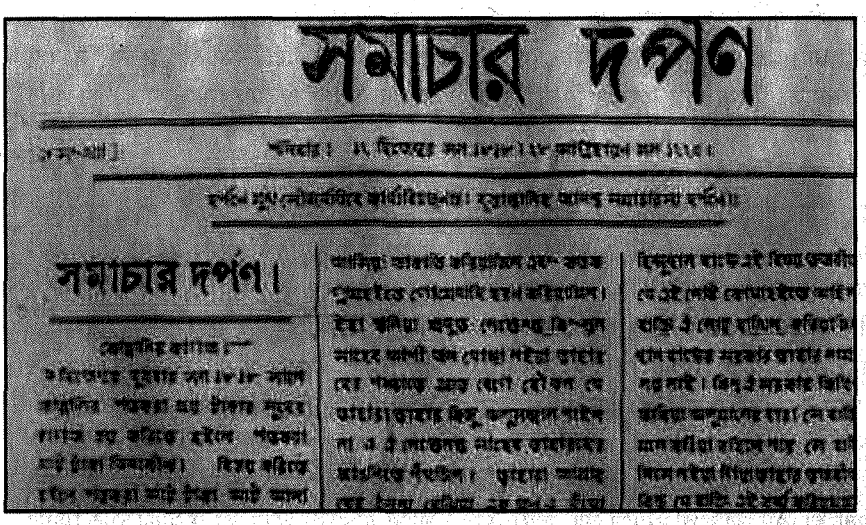
समाचार दर्पण

समाचार दर्पण।

गाँधी युग के पूर्व समाचार-पत्रों का रूप साहित्यिक अधिक था किन्तु, उसके बाद बदली हुई भारतीय राजनीतिक परिस्थितियों ने इनका स्वर उग्र कर दिया। तीव्र राजनीतिक तेवर इनमें परिलक्षित हुआ। इस समय तक सभी राजनेता तथा साहित्यकार पत्रकारिता की शक्ति समझ चुके थे। स्वतन्त्रता आन्दोलन में पत्रकारिता एक सशक्त हथियार के तौर पर प्रयुक्त किया गया।

लेखिका श्यामलाल कॉलेज, दिल्ली में एसोसिएट प्रोफेसर हैं।
archnaupadhyaya@yahoo.com
+919958521039

भारतीय भाषा में निकलने वाला पहला समाचार-पत्र 'समाचार दर्पण' है। यह सर्वप्रथम 23 मई, 1818 ई. को, बांग्ला भाषा में प्रकाशित हुआ। इस पत्र का पूरा प्रबन्धन तथा सम्पादन भारतीयों द्वारा किया गया। हिन्दी पत्रकारिता का जन्म भी बंगाल (कलकत्ता) में हुआ। हिन्दी भाषा का सर्वप्रथम समाचार-पत्र 'उदन्त मार्तंड' है। इसके सम्पादक पं. युगल किशोर शुक्ल थे तथा यह पत्र 30 मई, 1826 ई. को आरम्भ हुआ। हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव बंगाल में हुआ लेकिन, उत्तर-प्रदेश में यह पूर्ण रूप से विकसित हुआ। उत्तर-प्रदेश से प्रकाशित होने वाला पहला समाचार-पत्र 'बनारस अखबार' है। इसे काशी से राजा शिव प्रसाद 'सितारे हिन्द' ने 1845 ई. में प्रारम्भ किया। तत्पश्चात् काशी, बरेली, प्रयाग (इलाहाबाद) आदि अनेक स्थानों से विभिन्न समाचार-पत्रों का प्रकाशन हुआ। इन सभी समाचार-पत्रों का मूल स्वर एक ही था। स्वतन्त्रता संग्राम में इन पत्रों ने अपने उत्तरदायित्व का बखूबी निर्वाह किया। गाँधी युग के पूर्व समाचार-पत्रों का रूप साहित्यिक अधिक था किन्तु, उसके बाद बदली हुई भारतीय राजनीतिक परिस्थितियों ने इनका स्वर उग्र कर दिया। तीव्र राजनीतिक तेवर इनमें परिलक्षित हुआ। इस समय तक सभी राजनेता तथा साहित्यकार पत्रकारिता की शक्ति समझ चुके थे। स्वतन्त्रता आन्दोलन में पत्रकारिता एक सशक्त हथियार के तौर पर प्रयुक्त किया गया। इसके माध्यम से साहित्य, संस्कृति, शोध, विज्ञान, सामाजिक विकास तथा राजनैतिक हलचलों से सम्बन्धित समाचारों को जनता तक पहुँचाया गया।

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से ही भारतीय राजनैतिक हलचलों में एक अलग तरह की तेजी आयी। इस सदी में स्वदेशी आन्दोलन का स्वर तीव्र हुआ। सन् 1919 भारतीय इतिहास में उल्लेखनीय वर्ष रहा। मार्च 1919 ई. में ब्रिटिश सरकार ने रौलट बिल पास कर दिया, जिसका पूरे देश में सख्त विरोध हुआ। इसी वर्ष अप्रैल 1919 में जलियाँवाला बाग हत्याकांड हुआ। इस नरसंहार के खिलाफ पूरे देश में विरोध एवं प्रदर्शन किया गया। इस समय सिर्फ राजनीति में ही नहीं बल्कि, साहित्य के क्षेत्र में भी व्यापक बदलाव हुआ। साहित्य में एक नवीन भाषा-शैली, विषय-वस्तु एवं नवीन छन्दों का उदय हुआ। भारतीय राजनीति एवं साहित्य में आये क्रान्तिकारी परिवर्तन से पत्रकारिता भी अछूती नहीं रह सकी।

महात्मा गाँधी स्वयं सधी हुई पत्रकारिता करते थे। उन्होंने अपने विचारों तथा सन्देशों को जनता तक पहुँचाने के लिए पत्रकारिता को माध्यम बनाया।

इसी माहौल में, 6 अप्रैल, 1919 को गोरखपुर (उत्तर-प्रदेश) से 'स्वदेश' का उदय हुआ। इस पत्र को प्रकाशित करने का श्रेय पं. दशरथ प्रसाद द्विवेदी को जाता है। हालाँकि इस पत्र को निकालने का विचार इसके पूर्व दो बार, वसन्त पंचमी एवं शिवरात्रि पर बना था। लेकिन, सरकार की ओर से जमानत का व्यवधान आ जाने की वजह से इसमें विलम्ब हो गया। 'स्वदेश' के प्रारम्भ होने के पूर्व ही इस पर 500 रुपये की जमानत लगा दी गयी। अनेक समस्याओं एवं आर्थिक तंगी के बीच 'स्वदेश' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। 'स्वदेश' अपने युग का एक महत्त्वपूर्ण पत्र है। जिस समय इस पत्र का प्रकाशन आरम्भ हुआ उस समय भारत में अँग्रेजों की सत्ता थी। अँग्रेजी शासन और हुकूमत के खिलाफ कुछ कहने-लिखने का काम खतरे से खाली नहीं था। अँग्रेजों के विरुद्ध लिखने की कीमत द्विवेदी जी को भी चुकानी पड़ी। उनके पत्रकार-जीवन का अधिकांश समय जेल में ही व्यतीत हुआ। 'स्वदेश' और उसके सम्पादक को सरकारी कोप का भाजन बनना पड़ा। शासकीय व्यवधानों तथा आर्थिक तंगी से जूझते हुए यह पत्र 1919 ई. से 1938 ई. तक अपना वजूद बनाये रखने में सफल रहा।

'स्वदेश' अपने भारतवासियों के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास का ध्येय लेकर निकला था। अँग्रेजी सत्ता के बहिष्कार के साथ-ही-साथ अपनी गौरवमयी संस्कृति को पूरे विश्व के समक्ष पुनः साबित करना इसका लक्ष्य था। यह देश को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त करने के लिए जनता में उत्साह और साहस का शंखनाद करता रहा। जनता में कर्म के प्रति आस्था जगाना, निराशा और अज्ञान के अन्धकार को चीरकर आशा और ज्ञान-विज्ञान का प्रकाश फैलाना, देश और विदेश की घटनाओं से जनता को अवगत कराना और उसे जागरूक बनाना इसकी नीतियों में शामिल था। विश्व-स्तर पर हो रहे विकास की सूचना देकर देशवासियों में उसके समकक्ष खड़ा होने की ललक पैदा करना इसका एक अन्य उद्देश्य था। इसका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में जनता की भागीदारी सुनिश्चित करना था। 'स्वदेश' स्वराज्य-प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयास करता रहा।

पं. दशरथ प्रसाद द्विवेदी के अलावा अन्य पत्रकारों तथा साहित्यकारों ने भी समय-समय पर 'स्वदेश' के सम्पादन का भार सँभाला। 7 अक्टूबर, 1924 ई. के विशेषांक का सम्पादन पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' के द्वारा किया गया, 18 मार्च, 1927 ई. के अंक का सम्पादन कार्य रामनाथ लाल 'सुमन' के द्वारा सम्पन्न हुआ। 7 अक्टूबर, 1924 ई. को विजयादशमी पर विजयांक नाम से निकले विशेषांक को अँग्रेज शासन ने आपत्तिजनक माना और इसे प्रतिबन्धित कर दिया। यह पत्र प्रेमचन्द के सरस्वती प्रेस द्वारा प्रकाशित हुआ था। इसमें छपी विस्फोटक सामग्री से क्रोधित होकर अँग्रेजी हुकूमत ने 'उग्र' जी तथा दशरथ प्रसाद द्विवेदी को गिरफ्तार कर लिया। इनकी गिरफ्तारी के बाद 'स्वदेश' के सम्पादन की जिम्मेदारी, 4 जनवरी, 1925 ई. से श्री मुकुट बिहारी वर्मा ने सँभाल ली। लेकिन, कुछ सप्ताह के पश्चात ही 'स्वदेश' का प्रकाशन स्थगित हो गया। जेल से छूटने के बाद द्विवेदी जी ने इसे पुनः आरम्भ किया। 27 अप्रैल, 1923 ई. से रघुपति सहाय ने इसके कई अंकों का सम्पादन पूरी निष्ठा के साथ किया। इसके बाद सरकारी नीतियों की मार, आर्थिक तंगी तथा कार्यकर्ताओं की कमी के कारण कुछ समय तक बन्द रहने के पश्चात् 24 नवम्बर से यह पुनः प्रकाशित हुआ। बार-बार सरकार द्वारा जमानत राशि के बढ़ाने तथा द्विवेदी जी को जेल हो जाने के कारण यह पत्र कई बार बन्द हो-होकर पुनः प्रकाशित होता रहा। 22 जनवरी, 1922 ई. के बाद पाँच महीने तक बन्द रहने के पश्चात् 9 जुलाई 1922 ई. को यह फिर प्रकाशित हुआ। सन् 1932 में प्रेस ऐक्ट की चपेट में आने के कारण पांच वर्षों तक इसका प्रकाशन रुका रहा, पुनः 1937 ई. में यह आरम्भ हो सका। राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याओं से जूझते रहने के कारण इस पत्र का प्रकाशन नियमित रूप से कभी नहीं हो पाया। अन्ततः 1938 ई. में यह पूरी तरह से बन्द हो गया।

'स्वदेश' में प्रकाशित होने वाले सम्पादकीय स्तम्भों, साहित्यिक रचनाओं, लेखों, निबन्धों, कहानियों, कविताओं तथा समाचारों में राष्ट्रोद्धार की ध्वनि सर्वोपरि रही। इसके सम्पादकीय लेख भारतीय जनता को जागरूक करते रहे। 'स्वदेश' में तत्कालीन राजनीतिक घटनाएँ तथा सूचनाएँ प्रकाशित होती रहीं, साथ ही उन घटनाओं पर जनता की प्रतिक्रिया को भी प्रकाशित किया गया। इस तरह सरकारी दमनकारी नीतियाँ तथा प्रतिक्रियास्वरूप जनता द्वारा किये गये आन्दोलनों का विवरण, दोनों ही इसमें प्रस्तुत किये गये। 'स्वदेश' में महात्मा गाँधी पर अनेक लेख, उनके विचार, सन्देश तथा राजनीतिक गतिविधियों की सूचनाएँ हैं। 'स्वदेश' में नियमित रूप से अनेक समाजोपयोगी लेख निकलते रहे। भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा सदैव दयनीय रही। स्त्री-शिक्षा का प्रसार, बाल-विवाह को रोकना, विधवाओं का पुनर्विवाह, सती-प्रथा को समाप्त करना तथा स्त्रियों को पर्दे से बाहर निकालने के लिए यह पत्र सतत् प्रयास करता रहा। इस पत्र में किसानों से सम्बन्धित अनेक समस्याओं तथा उसके निदान भी दिये गये। किसानों को वैज्ञानिक रीति से खेती करना, कृषि से सम्बन्धित कानूनों से अवगत कराना तथा उन्हें अपने अधिकारों के प्रति सचेत करने का कार्य किया गया। दलितों तथा अछूतों के उद्धार के लिए भी प्रयास हुए। अस्पृश्यता के अभिशाप से मुक्त हुए बिना देश की स्वाधीनता सम्भव नहीं है। इसलिए इस पत्र के सम्पादकीय, लेखों, कहानियों तथा कविताओं के माध्यम से समाज को इस घृणित व्यवस्था से मुक्त करने का प्रयास हुआ। इस परिस्थिति में साहित्यकारों ने भी अपने दायित्व को समझा। साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में समाज की दीन-हीन स्थिति का चित्रण किया तथा सरकारी और जमींदारी व्यवस्था जो कि किसानों और मजदूरों का शोषण कर रहे थे, उसके खिलाफ अपनी लेखनी चलायी।

इस प्रकार 'स्वदेश' ने भारतवर्ष में स्वराज्य की स्थापना के लिए प्रत्येक सम्भव स्तर पर प्रयास किया। लगातार अट्ठारह वर्षों तक 'स्वदेश' मर-मरकर पुनः जीवित होता रहा। 1919 ई. से आरम्भ होकर 1938 ई. तक 'स्वदेश' अँग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्षरत रहा। अपनी धारदार नीतियों तथा प्रखर आवाज के कारण यह पत्र अँग्रेज सरकार के आँख की किरकिरी बना रहा। इस कारण यह अँग्रेजी शासन के द्वारा रौंदा जाता रहा किन्तु, अपनी अदम्य जीजिविषा के दम पर पुनर्जीवित होकर भारतीय आन्दोलन को दिशा देता रहा। ❑